Department of Prakrit and Sanskrit

Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

Syllabus

Ph.D. Course Work

(From the Academic Year 2020-2022)

Approved by B.O.S. in Prakrit

इकाई–I प्राकृत भाषा का इतिहास : उत्पत्ति एवं विकास

वैदिक (छान्दस्) साहित्य में प्राकृत भाषा के तत्त्व

प्राकृत भाषा का विकास–प्रथमयुगीन प्राकृत, मध्ययुगीनप्राकृत, तृतीययुगीनप्राकृत–अपभ्रंश

इकाई–II विभिन्नप्राकृतों की विशेषताएँ

(मागधी, अर्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री, पैशाची, अपभ्रंश)

इकाई–III अर्धमागधी एवं शौरसेनीआगमसाहित्य काइतिहास

प्राकृतकाव्य साहित्य काइतिहास

महाकाव्य, चरितकाव्य,खण्डकाव्य, चम्पू, कथासाहित्य

इकाई–IV प्राकृतलाक्षणिकसाहित्य काइतिहास एवंप्राकृतव्याकरण

प्राकृत लाक्षणिक साहित्य–अलंकार शास्त्र, छन्द शास्त्र, कोश शास्त्र

प्राकृत व्याकरण–कारक, संधि, धातुरूप, तद्धित, कृदन्त, समास, शब्दरूप

पाठ्यपुस्तक –

- प्राकृत भाषा प्रबोधिनी, डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राज.)
- प्राकृत स्वयं शिक्षक– प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमीए जयपुर
- प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. नेमीचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी

- प्राकृत साहित्य का इतिहास– डॉ. जगदीशचंद जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
- प्राकृत बोध– आचार्य सुनील सागर, जैन संस्कृति शोध संस्थान, इंदौर, सन् 2007